शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 1; जूलाई-दिसंबर, 2020; पृष्ठ संख्या : 23-35

बनघोषा में अभिव्यक्त प्रणयानुभूति : एक अध्ययन

पूजा बरुवा

शोध-सार

बिहुगीत असमीया लोकसाहित्य का प्रमुख अंग है। मुख्यतः रङाली बिहु के समय जो गीत गाये जाते हैं, वे ही बिहुगीत हैं। प्रेम संबंधी बिहुगीतों को *बनघोषा* कहा जाता है। इनके रचयिता कौन हैं, इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता; पर इनके रचयिता की काव्य-प्रतिभा में कोई संदेह नहीं है। गाँव के सहज-सरल, निरक्षर लोगों द्वारा गाये जाने-वाले ये गीत सुर, ताल, लय, बोधगम्यता, संप्रेषणीयता एवं प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से अद्वितीय हैं। बिहुगीत कई प्रकार के होते हैं – हुचरि, *योरानाम*, *बनघोषा* (=वन में गाये जानेवाले गीत), जेङबिहु नाम आदि। *बनघोषा* बिहुगीत का एक महत्त्वपूर्ण भाग है। ये गीत सुनसान मैदानों में, नदी के घाटों में, जंगलों में, चैत महीने में मनाये जानेवाली *राति बिहु* (=रात के समय मनाया जानेवाला बिहु) में, वनों में, गाय-भैंस चराते वक्त चरवाहों (मुख्यतः भैंस के चरवाहों) द्वारा उन्मुक्त होकर गाये जाते हैं। ये यौवन के गीत हैं, प्रेम तथा आकर्षण के गीत हैं। युवक-युवती के आपसी प्रेम को अभिव्यक्त करने का सुंदर माध्यम है बनगीत। बनगीतों में प्रेम की विविध स्थितियों का किस प्रकार चित्रण किया गया है, उसी की चर्चा प्रस्तुत शोध-पत्र में की गयी है।

बीज शब्द : *बिहु, बनगीत, प्रेम* ।

प्रस्तावना

बिहु असमीया जाति का जातीय उत्सव ही नहीं, यह असमीया जाति की पहचान है, सांस्कृतिक प्रतीक है। यह समस्त असमीया जाति के आवेग तथा भावनाओं से जुड़ा हुआ है। पुराने समय में ग्रामीण कृषिजीवी लोग वसंत काल में अनेक प्रकार के नृत्य-गीत के जरिये आनंद प्रकट करते थे। इसे ही बिहु कहा जाता है। यह बिहु तीन प्रकार के हैं- रङाली या बहाग बिहु, भोगाली या माघ बिहु और कङाली या काति बिहु। लेकिन बहुत पहले चैत के महीने में भी बिहु मनाया जाता था और इसे *राति बिहु* कहते हैं। चैत के पूरे महीने में युवक-युवती रात को बिहु नाचते-गाते हुए कामाभिव्यक्ति करते थे। कई स्थानों में युवक और युवती अलग-अलग होकर *राति बिहु* मनाते थे। बिहुगीत कई प्रकार के होते हैं। प्रेम संबंधी बिहुगीतों *बनघोषा* कहलाते हैं। रङाली बिहु के समय गाये जानेवाली *बनघोषा* का असमीया समाज तथा साहित्य में एक अलग ही महत्व है। इन *बनघोषाओं* में प्रेम की अलग-अलग स्थितियों का चित्रण देखने को मिलता है। अब हम इन्हीं स्थितियों पर विचार करेंगे।

प्रस्तुत अध्ययन की पद्धति समीक्षात्मक है। अध्ययन में बिहु से संबन्धित ग्रन्थों की सहायता ली गयी है। असमीया भाषा में 'स' उच्चारणवाले दो वर्ण हैं- 'च' और 'छ'। असमीया भाषा में 'स' के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमीया के 'स', 'च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिंदी लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं। हिंदी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्णों के प्रयोग होते हैं - एक का उच्चारण 'य' है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है। असमीया 'य' के लिए हिंदी में भी 'य' रखा गया है, पर असमीया के 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' रखा गया है। संस्कृति से जुड़े विविध शब्दों को इटालिक्स में रखकर उनके अर्थ कोष्ठक में रखे गए हैं।

विश्लेषण

बिहु मूलतः कृषि पर आधारित उत्सव है। हमारे पूर्वज ये मानते थे कि खेत में यौनोद्दीपक नृत्य-गीत करने से जमीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ती है। इस संबंध में आबुल हुछेइन और सुरेन्द्र नाथ डेका ने 'हुचरि : मुकलि बिहु, बिहु नाचर नियमावली' नामक पुस्तक में इस प्रकार कहा है-

> तेओँलोके विस्वास करिछिल य़े 'सामवेद'त उल्लेख करार दरे सुमधुर सुरेरे गीत-मात गाले अर्थात् Music Therapy र जरियते शस्यर उत्पादिका शक्ति बृद्धि करिब परा य़ाय। सेयेहे तेओँलोके पथारलै गै विभिन्न गीत-मात विशेषकै

यौनगन्धी गीत गाइ, यौनोद्दीपक नृत्य करिछिल। आनकि संतान-सम्भवा मातृसकलेओ पथारलै गै एनेदरे गीत-मात आरु नृत्य परिवेशन करिछिल। एनेदरेइ कालक्रमत उत्पत्ति हैछिल- बिहु गीत आरु बिहु नृत्य-यार शृंखलाबद्ध रूप हैछे रङाली बिहु उत्सव।

(हुछेइन और डेका2018:155)

(भावार्थ- वे लोग मानते थे कि सामवेद में उल्लेख होने की तरह सुमधुर सुर से गीत गाने से अर्थात् Music Therapy से फसल का उत्पाद बढ़ाया जा सकता है। इसीलिए वे खेत में जाकर अनेक प्रकार के यौनोद्दीपक गीत गाते तथा नृत्य करते थे। यहाँ तक कि गर्भवती महिलाएँ भी खेत में जाकर इस प्रकार नाचती-गाती थीं। इसी प्रकार कालक्रम में बिहुगीत और बिहुनृत्य की उत्पत्ति हुई थी, जिसका शृंखलित रूप है रङाली बिहु उत्सव।)

बनघोषा को *बनरीया गीत* (= वन में गाये जाने वाले गीत), *गरखीया गीत* (= ग्वाल गीत) आदि भी कहा जाता है। बिहु के अगाध पंडित डॉ. लीला गगै *बनघोषा* के संबंध मे लिखते हैं-

यौवनर जोवारत उटि अहा बनरीया भाव-भाषार एइ गीतबोरक मानुहे बनघोषा बोले। बनघोषाबोर बनरीया नाम बा गरखीया नाम बुलियेइ साधारणते जनाजात। बनघोषा संज्ञाटो नतुन; गीतबोर बहुत पुरणि। (गगै 2010:63)

(भावार्थ- यौवन के ज्वार में बहकर आनेवाले बनैला भाव-भाषा के इन गीतों को लोग *बनघोषा* कहते हैं। *बनघोषा* सामान्यतः *बनरीया नाम* (=जंगल के गीत) या *गरखीया नाम* (=चरवाहा गीत) से जाने जाते हैं। *बनघोषा* की संज्ञा नयी है, पर गीत बहुत पुराने हैं।)

बनघोषा मूलतः प्रेम के गीत हैं, यौवन के गीत हैं। अतः इनमें मिलन की आकांक्षा, यौन आकर्षण, सौंदर्यानुभूति, यौवन का महत्व, प्रेम का महत्व, आजीवन साथ निभाने का वादा, प्रेम की उन्मादावस्था, उन्मुक्तता, मान, अनुराग, विरह की तड़प आदि की अभिव्यक्ति हुई है। साथ ही इसके जरिये कभी-कभी हृदय की अव्यक्त भावनाएँ वक्रतापूर्ण ढंग से व्यक्त हो उठती हैं। *बनघोषा* में जिन भावों की अभिव्यक्ति होती हैं , वे वैयक्तिक न होकर सामाजिक होते हैं। वे केवल किसी एक युवक-युवती के मन की भावनाएँ नहीं हैं, बल्कि ये तो सभी असमीया ग्रामीण युवक-युवतियों के मन की भावनाओं की अभिव्यक्ति है।

बनघोषा की एक विशेषता यह है कि इनको गाते समय युवक-युवती एक दूसरे को उनके प्रकृत नामों के जरिये नहीं, बल्कि अन्य प्यारसूचक सम्बोधन से बुलाते हैं। जैसे- युवकों के लिए *चेनाइ,*

देहा देहाजान, *कलिजा* आदि शब्दों का प्रयोग होता है, जिसका अर्थ 'प्यारा' होता है। इसके अलावा इनके लिए *सोण* (= सोना), जान (= जान) और युवतियों के लिए *नाचनी* (= बिहु नाचनेवाली लड़की), *लाहरी* (= प्यारी), *सादरी* (= स्नेहमयी), *राङली* (= रंगीली), *मइना* (= प्यारी), *सेन्दूरी* (= सिंदूरी), *चेनेही* (= प्यारी) आदि संबोधनों का प्रयोग किया जाता है।

बनघोषा युवक-युवतियों के अन्तःस्थल की स्वाभाविक अनुभूति की अभिव्यक्ति है। प्रेम का पहला पड़ाव होता है आकर्षण, सौन्दर्य आकर्षण को जन्म देता है और आकर्षण प्रेम को। यही प्रेम धीरे-धीरे बढ़कर प्रेमी-प्रेमिकाओं में उन्माद बढ़ा देता है। प्रेम चिरंतन सत्य है, प्रेम ही सृष्टि का आधार है। सृष्टि के मूल में प्रकृति और पुरुष का प्रेम है। प्रेम के बिना संसार नहीं चल सकता। यौवन के आगमन से जीवन में प्रेम भी अपने आप आयेगा। जो प्रेम ईश्वरसृष्ट है, वह प्रेम किये बिना रहा नहीं जाता-

प्रथमे ईश्वरे सृष्टि सरजिले
तार पिछत स्रजिले जीव;
सेइनोजन ईश्वरे पीरिति करिले
आमिनो नकरिम किय?

(दास 2017: 43)

(भावार्थ- पहले ईश्वर ने सृष्टि का सृजन किया और उसके बाद जीव का। उसी ईश्वर ने अगर प्रेम किया है, तो भला हम क्यों न करें?)

मनुष्य जीवन में यौवन का अत्यंत महत्त्व होता है। यह जीवन का ऐसा सुनहरा समय है, जब मनुष्य के जीवन में नये उत्साह, नयी उमंग, नये-नये सपने पंख फैलाते हैं। मनुष्य जीवन में प्रेम करने का सही समय यौवन को ही माना जाता है और यौवन में ही प्रेम सर्वाधिक बढ़ता है। बिहुगीतों में इसी यौवन के महत्त्व को बार-बार दिखाया गया है। यौवन में कदम रखते ही युवक-युवतियों के मन में प्रेम तथा विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण बढ़ता है, वे अपने प्रेम को पाना चाहते हैं। युवक जानता है कि यही प्रेम करने का सही समय है, अतः वह युवती से यौवन रहते ही प्रेम करने की बात करता है -

इमानकै बुजाले नुबुज नाचनी
कथालै नकर काण।
गछर गुटि नहय बारे बारे लागिब
यौवन गले पाबले टान॥

(दास2017: 44)

(भावार्थ- हे *नाचनी*, इतना समझाने पर भी तू नहीं समझती है, मेरी बातों पर तू ध्यान ही नहीं देती है। यौवन पेड़ का बीज नहीं है कि बार-बार

फलेगा, एकबार यौवन चला गया तो मिलना मुश्किल है ।)

प्रकृति सुंदर है, यौवन सुंदर है, प्रकृति और यौवन के समन्वय में प्रेम भी सुंदर है। प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखने पर आस पास का वातावरण तथा लोग भी सुंदर लगने लगते हैं। युवक-युवती को परस्पर जो साधन सबसे अधिक आकर्षित करता है, वह है रूप या शारीरिक सौन्दर्य। सौन्दर्य, नजरों से होकर दिल में उतरता है और रूप के द्वारा जब युवक-युवती एक दूसरे से बंध जाते हैं या आकर्षित होते हैं तो उससे प्रेम-व्यापार चलने लगता है। बिहुगीतों में भी युवक-युवतियों को एक दूसरे के सौन्दर्य से मोहित होकर आकर्षित होते देखने को मिलता है। प्रेमी अपनी प्रेमिका के रूप-सौन्दर्य से अभिभूत होकर कहता है -

हातरे आङुलि पकलि पकलि
भरिरे आङुलि घन।
कोनजन बिधाताइ तोमाक सरजिले
चाइनो चाइ थाकिबर मन॥

(दास2017: 43)

(भावार्थ- तुम्हारे हाथों की उँगलियाँ पतली हैं और पैरों की उँगलियाँ घनी हैं। किस विधाता ने तुम्हें बनाया है कि तुम्हें देखते ही रहने का मन करता है ।)

बिहुगीतों के रचयिता भले ही निरक्षर हो, पर उन ग्रामीण कवियों की सौंदर्यनुभूति तथा सृजन-प्रतिभा अद्वितीय हैं। बिहुगीतों में युवती का नख-शिख वर्णन मिलता है। युवती के सौन्दर्य-वर्णन करने के लिए इन गीतों में अनेक उपमान जुटाएँ गये हैं। युवती के मुख-सौन्दर्य की तुलना चाँद के साथ करते हुए युवक कहता है-

इओ बोले मइना सिओ बोले मइना
मइ बोलौं बुकुरे सोण ।
सोणरे मुखलै चाबके नोवारि
येन पूर्णिमार जोन ॥

(दास2017: 54)

(भावार्थ- हर कोई उसे मैना कहकर बुलाता है, पर मैं उसे दिल का टुकड़ा बुलाता हूँ। उसके चेहरे की तरफ देखने से ऐसा लगता है मानो वह पूर्णिमा का चाँद है ।)

जिस प्रकार युवक युवती के शारीरिक सौन्दर्य को देख आकर्षित होता है, उसी प्रकार युवती भी युवक के सुंदर शरीर को देखकर उसकी तरफ खींची चली जाती है। अपने प्रेमी के शारीरिक सौन्दर्य का वर्णन कर युवती गाती है-

कलाफुल धुनीया कँकाल खामुचीया
एमुठन बहले बुकु ।
तोमार ऐ चेनाइटि पाहरौं केनेकै
तोमाते दुयोटि चकु।

(दास 2017: 76)

(भावार्थ- तुम्हारी पिंडली सुंदर है, कमर भी क्षीण है और तुम्हारा सीना चौड़ा है। हे प्यारी , मैं तुम्हें कैसे भूल सकता हूँ, मेरी नजरें तो सिर्फ तुम पर ही टिकी हुई हैं ।)

युवक, युवती से अपने प्यार का इजहार करना तो चाहता है; पर वह कर नहीं पाता। वह चाहता है कि उसके कहे बिना ही युवती उसके दिल की बात समझ जाए। पर जब वह उसके दिल की बात नहीं समझती या समझकर भी न समझने का ढोंग करती है, तब आखिर में युवक सीधे-सीधे उसे प्रेम का प्रस्ताव देकर उसके दिल का हाल भी पूछ ही लेता है-

किनो काठचितीया हलि ऐ लाहरी
एकोके नुबुजु मइ ।
सँचाकै सुधिछो जीवनर लगरी
हबिने नहव तइ ॥

(दास2017: 74)

(भावार्थ- हे *लाहरी* (पतले शरीर की सुंदरी), तू कितनी कठोर है, मैं अब और कुछ भी नहीं समझूँगा। सच-सच पूछ रहा हूँ क्या तू मेरी जीवन साथी बनेगी ?)

असमीया ग्रामीण युवतियों में लज्जा का भाव अधिक होता है। एक ओर कभी वे उन्मुक्त होकर प्रेम करने की बात करती हैं, तो दूसरी ओर वे अपने दिल की बात अपने प्रियजन को कह भी नहीं सकती। इसीलिए वे आँखों-आँखों में ही अपने प्रेम का इजहार करती हैं। युवक युवती की आँखों में अपने लिए प्यार देखकर समझ जाता है और उससे कहता है -

मेलेङर माटिते चेलेङखन पेलालौं
तोमार कथाके भाबि।
मुख खुलि नकॉला चावनिते बुजिलौं
मोक भालपोवा बुलि ॥

(दास2017: 83)

(भावार्थ- मैंने तुम्हारे बारे में सोचकर मेलेङ में अपनी चेलेङ (विशेष प्रकार की असमीया चादर) गिरा दी । तुमने जुबान से नहीं कहा; पर तुम्हारी नजरों ने बता दिया कि तुम मुझ से प्यार करती हो ।)

मिलन की आकांक्षा प्रेम की एक अत्यंत ही सुंदर स्थिति है। प्रेमी-प्रेमिका एक दूसरे से मिलने के लिए न जाने कितना इंतजार करते हैं। कभी-कभी प्रेम की गहनता इज़हार से नहीं, बल्कि इंतजार से पता चलता है। इंतजार प्रेम को अधिक बढ़ाता है और मिलन की इच्छा मन को चंचल कर देती है। प्रेमी-प्रेमिका का मन केवल एक ही बात पर लगा रहता है कि आखिर कैसे वे प्रियजन की एक झलक देख सकें या उनसे अपने दिल की बातें कर सकें।

प्रेमिका अपनी इसी व्याकुलता को व्यक्त करती हुई कहती है-

बहौं तातँर पातत चकु आलिबाटत
माको सरि सरि परे।
तोमार कथाके भाबि-गुणि थाको
देहा मोर केनेबा करे ॥

(दास 2017: 64)

(भावार्थ- मैं करघा चलाने बैठती तो हूँ; पर मेरी नजरें हर वक्त रास्ते पर ही रहती हैं। मेरे हाथ से घिरनी गिर पड़ती है। तुम्हारे बारे में सोच-सोचकर मेरा शरीर मचल उठता है ।)

प्रेम में प्रेमी-प्रेमिका एक दूसरे से मिलने के लिए व्याकुल हो जाते हैं। अपने प्रियतम की एक झलक मिल जाये बस वही काफी है। वे मानो एक-दूसरे से मिलने का बहाना खोजते रहते हैं। *बनघोषा* में प्रेमी-प्रेमिका के मिलने के बहाने का भी उल्लेख मिलता है-

चोतालर आगते मिठा आम एजुपि
ताते परि बिनाले कुलि ।
मारक फाकि दि आहिबि चेनेही
चालनी आनोगै बुलि ॥

(दास2017: 90)

(भावार्थ- आँगन के मीठे आम के पेड़ पर कोयल गीत गा रही है। हे प्रियतमा, माँ से झूठ बोलकर छलनी लाने के बहाने से तू मुझसे मिलने चली आना ।)

प्रेम में यौन आकर्षण का होना स्वाभाविक है। युवक-युवती दोनों अपने युवा मन की वासनाओं को तृप्त करना चाहते हैं; पर समाज के डर तथा नैतिकता के बंधन उन्हें रोक देते हैं। इसीलिए *बनघोषा* के माध्यम से युवक-युवती अपने मन की दमित वासनाओं को वक्रतापूर्ण ढंग से अभिव्यक्त करते हैं। जहाँ यौन आकर्षण का चित्रण है, वहाँ अश्लीलता आ ही जाती है; पर इन *बनघोषा*ओं में श्लीलता के आवरण में अश्लीलता देखने को मिलती है -

आजि राति भागि याम तोमार लगत थाकि याम
बहलाइ पारिबा पाटी ।
चन्द्र सुरुजक मिनति करि याम
देरिकै पुवाब राति ॥

(दास2017: 91)

(भावार्थ- आज रात हम दोनों भाग जायेंगे और दोनों एकसाथ रहेंगे, इसलिए फैलाकर विस्तर लगाना। मैं चाँद तथा सूरज से प्रार्थना करूँगा ताकि सुबह देर से हो ।)

वसंत ऋतु के आगमन से प्रकृति नया रूप लेती है। पेड़-पौधे, चिड़िया, पहाड़, नदियों में भी मानो नयी उमंग आ गयी हो। ऐसे में मनुष्य इसके प्रभाव से कैसे अछूता रहेगा। प्रकृति का नांदनिक सौन्दर्य युवक-युवती के मन को चंचल कर देता है, उन्माद कर देता है । रङाली बिहु के मौसम में एक

प्रेममय वातावरण की सृष्टि होती है। युवा मन के लिए प्रकृति उद्दीपक बन जाती है। प्रकृति का सौन्दर्य मानो युवाओं को प्रेम-संदेश दे रही है-

किनो चाँत महीया बताह छाति मारिले
गछे बने सलाले पात।
किनो बाँहागरे बिहुटि आहिले
तोमालै परिल मनत ॥

(दास2017: 99)

(भावार्थ- चैत महीने की हवा चल रही है, पेड़-पौधों में नए पत्ते आ गए हैं। रङाली बिहु के आगमन ने मुझे तुम्हारी याद दिलायी है ।)

अपने दिल की बातों का पूर्वाभास कराने के लिए कभी-कभी शब्द नहीं, बल्कि अनेक प्रकार की रूप-भंगिमाएँ, चेष्टाएँ, वाचिक और शारीरिक विकार, मानसिक दशाएँ, उपहार आदि की आवश्यकता होती हैं। असमीया समाज में भी युवक-युवती अपने प्रेम को कपौफूल (= द्रौपदी माला), ताम्बूल, *बिहुवान* (=रङाली बिहु में दिया जानेवाला कपड़े का उपहार) , मुस्कुराहट, प्रेमपूर्ण दृष्टि से प्रकट करते थे। ये उपकरण बिना कुछ कहे ही प्रेम का आभास कराते हैं। प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए पहाड़ पर चढ़कर भी *कपौफूल* लाने की बात करता है-

मूररे शुवनि दिघलकै सेऔँता
गलधनर शुवनि खोपा।
पाहार बगाइ बगाइ कपौफूल आनि दिम
नेघेरी खोपाते लाँबा ॥

(दास2017: 84-85)

(भावार्थ - लंबी सीधी मांग सर की शोभा होती है और जुड़ा गले की शोभा है। तुम्हारे लिए मैं पहाड़ पर चढ़कर भी *कपौफूल* ले आऊँगा, तुम जुड़े में लगा लेना ।)

प्रेम में उपहारों का एक अलग ही महत्त्व होता है। इससे किसी के लिए प्रेम जाहिर तो होता ही है और इसके साथ-साथ प्रेम भी बढ़ता है। असमीया समाज तथा संस्कृति में *गामोचा* (= गमछा) का विशेष महत्व है। यह असमीया जाति की पहचान है। *गामोचा* बिहु में उपहार के तौर पर दिया जाता है और इसे *बिहुवान* भी कहा जाता है। वैशाख बिहु में *बिहुवान* का महत्त्व अधिक बढ़ जाता है; क्योंकि यह युवतियों के लिए उनके प्रियतम से अपने प्रेम जाहिर करने का माध्यम है। युवतियाँ अपने हाथों से सूत काटती हैं, करघा चलाती हैं, *बिहुवान* बुनती हैं और अपने प्रियजन को देती हैं। यह प्यार का वह उपहार है, जिसे देने के लिए युवतियाँ न जाने बिहु के कितने दिन पहले से इसकी तैयारी करती हैं। बिहु के दिन अपने प्रियजन को जब वे *बिहुवान* देती हैं, तब उनका प्यार अधिक बढ़ने लगता है। किसी

कारणवश अगर वे उन्हें नहीं दे पायी तो मानो उनके दुःखों की कोई सीमा ही नहीं रही। प्रेमिका अपने प्रेमी से कहती है-

तोमालै बुलि गामोचा बलाँ मइ
फुलरे चानेकि लाँइ ।
शतरुर भयते दिब नोवारिलाँ
सन्तापे मरिछाँ मइ ॥

(दास2017: 55)

(भावार्थ - मैंने तुम्हारे लिए फूलों के नमूने में *गामोचा* बुना था, पर शत्रुओं के डर से न दे पाने के कारण अब पछतावे से मर रही हूँ ।)

असमीया युवक-युवतियाँ केवल वक्त बिताने या मन बहलने के लिए प्यार नहीं करते हैं, उनके प्रेम आदर्श और नैतिकता से पूर्ण होते हैं। एक बार किसी से प्यार किया तो पूरी जिंदगी वे उसे निभाते हैं , प्रेम को सफल या पूरा करने की कोशिश की जाती है। वे ईश्वर से उनकी जोड़ी बनाए रखने के लिए प्रार्थना करते हैं -

उपरे उरिले करचन कणुवा
चापरि उरिले बग,
बिधि ऐ बिधाता मातो करयोरे
आमार नाभाङिबा लग।

(दास2017: 86)

(भावार्थ - ऊपर *करचन कणुवा* (बगुले की तरह दिखनेवाली चिड़ियाँ) और उसके नीचे बगुला उड़ रहा है। हे विधाता, हमारी जोड़ी न तोड़ने के लिए मैं आपसे हाथ जोड़ कर विनती करता हूँ ।)

मान-अभिमान प्रेम का अभिन्न अंग है। प्रेम में रूठना-मनाना होता ही रहता है। प्रेम में एक इंसान जब नाराज हो जाता है, तो दूसरे को चैन नहीं मिलता। असमीया *बनघोषाओं* में प्रणय-मान की भी अभिव्यक्ति मिलती है। प्रेमी प्रेमिका के घर के बाहर जाकर सीटी बजाते हुए उसके आने का संकेत देता है; पर उसके इशारे करने पर भी जब प्रेमिका बाहर नहीं आती, तो उससे रूठकर प्रेमी कहता है –

भातर काँही आगत लै तोलै मनत परे
मागुरि धानरे भात;
पदुलि मुखते सुहुरि मारिलाँ
ओलाइ नलगालि मात।

(दास2017: 149)

(भावार्थ- *मागुरि* (=एक प्रकार का चावल) के भात की थाली के आगे बैठकर मैं तुझे याद करता हूँ। मैंने तेरे घर के सामने सीटी बजायी, पर तूने बाहर आकर मुझे आवाज नहीं लगायी ।)

प्रेमिका हमेशा अपने प्रेमी का साथ चाहती है। उसके लिए उसके सुख-दुःख, आशा-आकांक्षा सब कुछ उसका प्रेमी ही है। वह बस आजीवन अपने

प्रेमी के साथ निभाना चाहती है, उसे जीवन में और कुछ भी नहीं चाहिए। वह अपने प्रेमी को उससे दूर न जाने के लिए इस प्रकार कहती है -

केलेइ लागिछे सोणर गामेखारु
केलेइ सरगर सुख।
जीवने मरणे तोमार सारथि
चेनाइ ऐ नेरिबा मोक ॥

(दास2017: 83)

(भावार्थ - क्या जरूरत है सोने के *गामखारु* (= असमीया स्त्रियों द्वारा हाथ में पहनने वाला एक प्रकार का अलंकार) की, स्वर्ग के सुख की। हे प्रीतम, मैं जीते-मरते तुम्हारे हमसफर बनकर रहना चाहती हूँ, तुम कभी मेरा त्याग मत करना ।)

प्रेम-संबंध में समय बीतने के साथ-साथ आत्मीयता और घनिष्ठता भी बढ़ने लगती हैं। दो चंचल मन मिलकर स्थिर होना चाहते हैं। असमीया ग्रामीण जीवन में पले-बड़े युवक-युवतियाँ भी अपने साथी के साथ हमेशा रहने तथा सुनहरे भविष्य के सपने देखते हैं। इन्हीं सपनों को वे *बनघोषाओं* के माध्यम से व्यक्त करते हैं। सामाजिक बंधन के अनुसार युवक-युवतियाँ अपने प्रेम को स्थायी तथा सफल बनाने के लिए विवाह के बंधन में बाँधना चाहते हैं। इसीलिए युवक, युवती से विवाह करके घर बसाने की बात करता है -

बहागर बिहुते पूर्णिमार रातिते
पातिम तोरे मोरे बिया ।
दुयो एकलगे घरे पाति याम
मिलाम ऐ दुखनि हिया ॥

(दास2017: 95)

(भावार्थ- रङाली बिहु की किसी पूर्णिमा की रात को हम दोनों शादी करेंगे। दो दिलों को मिलाकर हम एकसाथ घर बसायेंगे ।)

युवती भी युवक की बात पर हामी भरते हुए कहती है-

तोमार लगते लमे लगन गाथि
अगनिक करिमे साक्षी।
आयेओ नोवारे बोपाये नोवारे
थब मोक घरते राखि ॥

(दास2017: 74)

(भावार्थ- मैं तुम्हारे साथ शुभ लग्न में अग्नि को साक्षी मानते हुए विवाह करूँगी। न ही मेरी माँ और न ही मेरे पिता मुझे घर पर रख सकेंगे ।)

प्रेम में संयोग जहाँ है, वहाँ वियोग भी है। प्रिय-वियोग से ही उत्पन्न होता है विरह। विरह जीवन की एक ऐसी गंभीर स्थिति है, जहाँ प्रेमी-प्रेमिका का एक-दूसरे से दूर होकर अपने आप पर नियंत्रण नहीं रहता। प्रेम में विरह का भी एक विशेष महत्त्व है। विरह की स्थिति में प्रेम बढ़ता है,

क्योंकि प्रियतम से मिलने की आकांक्षा पल-पल जलाती रहती है। वियोग की अग्नि में जलकर ही मन के सात्त्विक भाव विशुद्ध और परिपक्व होते हैं। विरहानुभूति की अभिव्यक्ति हमें बिहुगीतों में भी देखने को मिलती है। विरह की ज्वाला में तपकर प्रेम अधिक निखरता है। समाज के बंधन, आर्थिक-स्थिति, जात-पात आदि कई कारणों से प्रेमी-प्रेमिकाओं का प्रेम अधूरा रह जाता है। प्रेम में मिली असफलता से विरह पैदा होता है और इस विरह की तड़प इतनी अधिक बढ़ती है कि असहनीय बन जाती है। प्रेमी अपनी प्रेमिका को भूलने की बहुत कोशिश करता है; पर उसका नासमझ मन उसे उन यादों से बाहर ही नहीं निकलने देता। प्रिय-वियोग की ज्वाला इतनी अधिक बढ़ जाती है कि उसके लिए मौत ही अंतिम रास्ता रह जाता है और वह मृत्यु की कामना करता है -

देहा कॉला हॉले रदे बरषुणे
कापोर कॉला हॉले मलि।
तोमार सन्तापत शरीर कॉला हॉल
यमेओ निनिये मारि ॥

(दास2017: 99)

(भावार्थ- मेरा शरीर धूप तथा बारिश में काला पड़ गया है और मेरे कपड़े मैले हो गये हैं। तुम्हारे विरह में मेरा शरीर जलकर काला हो गया है। यम भी मुझे मौत नहीं देता ।)

सबका प्रेम सफल नहीं होता, किसी-किसी को प्रेम में सफलता मिलती है, तो किसी किसी कोअसफलता भी मिलती है, विरह की ज्वाला मिलती है। एक ओर समाज का बंधन तथा माँ-बाप का प्यार है तो दूसरी ओर है उसका प्रेमी। ऐसे में प्रेमिका किसे चुन सकती है। इस उलझन तथा विरह-व्यथा में फँसकर वह मरना ही पसंद करती है। प्रेमिका के मन में, प्रिय से दूर होने के कारण विरह की तड़प, इतनी बढ़ गयी है कि अगर वह अपने प्रेमी को न पा सकी तो वह अपनी जान दे देगी -

केतेकी चराये गछर डालत परि
इनाइ बिनाइ कान्दि आछे ।
चेनाइटिक नेपाले मइओ मरि यामगै
खाबगै काउरी शगुने ॥

(दास2017: 66)

(भावार्थ - पपीहा पेड़ की डाली पर बैठकर रो रहा है। अगर मुझे मेरा प्रियतम न मिला तो मैं भी मर जाऊँगी और मेरा शव गिद्ध-कौवे खाएँगे ।)

मिलन के समय जो स्मृतियाँ सुखदायी होती हैं, वेही स्मृतियाँ वियोग के समय अत्यंत दुःखदायी बन पड़ती हैं। प्रेम में बंधकर प्रेमी-प्रेमिका एक दूसरे से जो वादा करते थे, जो पल बिताते थे, प्रियतम से बिछुड़ने के बाद बार-बार उसकी स्मृतियाँ दिल को दुखाती रहती हैं। न चाहने पर भी प्रेमी को अपनी

प्रेमिका की याद आती है; पर वह इस बात पर अभिमान भी करता है कि सिर्फ उसे ही अपनी प्रेमिका की याद आती है, प्रेमिका को तो उसकी कोई फिक्र ही नहीं है -

बरघरर मुधते भरालर टूपते
चराइ फुटुकला खाय ।
मोर जाना मनते परे घने घने
तोर जानो मनते नाइ ॥

(दास2017: 57)

(भावार्थ- बड़े घर की छत पर, भंडार के ऊपर चिड़ियाँ दाना चुगती हैं। मुझे बार-बार तेरी याद आती है, पर तुझे तो मेरी याद ही नहीं आती।)

प्रेम में आजीवन साथ निभाने का वादा कर जब उसे निभाया नहीं जाता तो हृदय में दुःख तथा पीड़ा का होना स्वाभाविक है। सामाजिक बंधन या अन्य किसी कारणवश अगर दो प्रेमी मिल न सके तो उस विरह की ज्वाला को कमोवेश रूप में सहन किया जा सकता है और इस से प्रेमी-प्रेमिका के मन में एक-दूसरे के प्रति प्यार कम या खत्म नहीं हो जाता; पर जब दोनों में से कोई एक प्यार में धोखा देता है, तो मन में क्षोभ तथा आक्षेप उत्पन्न होते हैं। अपनी प्रेमिका द्वारा प्रतारित प्रेमी आहें भरते हुए कहता है-

इफाले चकोवा सिफाले चकोवा
माजते मारिला ढाप,
आशा दि निराशा करिला नाचनी
महापाप लागिब गात।

(गगै 2010:139)

(भावार्थ- एक तरफ चकवा है और दूसरी तरफ है चकवी और दोनों के बीच है एक बड़ी दूरी है। हे *नाचनी*, मुझे आशा देकर निराश करने के कारण तुझे पाप छू जायेगा ।)

निष्कर्ष

बनघोषा में असमीया जाति के ग्रामीण जनजीवन की प्रतिच्छवि मिलती है। ये केवल सामान्य गीत नहीं हैं, ये असमीया युवक-युवतियों के प्रेमपूर्ण क्षणों के साक्षी हैं, उनके मन में जागृत होनेवाले अगणित भावनाओं, आशा-आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति के माध्यम हैं। साहित्यिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से भी इसके महत्त्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। निश्चित रूप से *बनघोषा* असमीया लोक-साहित्य की अनमोल निधि है।

ग्रंथ-सूची

गंधीया, जयकान्त. बिहुर सांप्रतिक चिंता.प्रथम. गुवाहाटी: असम बुक ट्रस्ट, 2019.

गगै, लीला. बिहु-एटि समीक्षा. चौथा. डिब्रुगढ़: बनलता, 2010.

दास, सूर्य. बिहुनामर बर्णाली. प्रथम. गुवाहाटी: असम बुक ट्रस्ट, 2017.

हुछेइन, आबुल और सुरेंद्र नाथ डेका. हुचरि : मुकलि बिहु, बिहु नाचर नियमावली. तीसरा. गुवाहाटी: बनलता, 2018.

संपर्क-सूत्र
सहायक अध्यापक,हिन्दी विभाग
नगाँव महाविद्यालय, नगाँव असम
ई-मेइल : pujabaruah7274@gmail.com
मोबाइल : 8486316810